● सुनो, समझो और लिखो :

५. मेरा भाग्य देश के साथ

-डॉ. राजेंद्र प्रसाद

जन्म : ३ दिसंबर १८८४ **मृत्यु :** २८ फरवरी १९६३ **रचनाएँ :** 'आत्मकथा' परिचय : डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।
इस पत्र में लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने अपनी देशभक्ति एवं देशसेवा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने की भावना बड़े भाई के पास व्यक्त की है।

5EAF5V

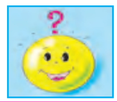

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि कहानी के किसी एक पात्र से आपकी मुलाकात हो जाए तो ...

राजेंद्र प्रसाद
कलकत्ता
१.३.१९१०
मंगलवार

पूज्य भाई महेंद्र प्रसाद जी,

विनम्र अभिवादन !

आप एक ऐसे व्यक्ति के पत्र को पाकर आश्चर्य चकित होंगे, जो यहाँ आपके साथ दिन-रात बिता रहा है। मैंने अनेक बार अपने मन की बातें आपसे कहने का विचार किया। पर एक भावुक व्यक्ति होने के नाते मैं आमने-सामने आपसे बातें नहीं कर सका।

मेरे भैया, पिछले लगातार २० दिन तक सोचते रहने के बाद मैं समझता हूँ कि मेरे लिए यही अच्छा होगा कि मैं अपने भाग्य को देश के साथ मिला दूँ। मैं जानता हूँ कि मुझसे-जिसपर परिवार की सारी आशाएँ केंद्रीभूत हैं-ऐसी बातें सुनकर आपके हृदय को एक भारी धक्का लगेगा। लेकिन मेरे भैया, मैं एक उच्चतर और महत्तर पुकार को भी अपने हृदय से महसूस करता हूँ।

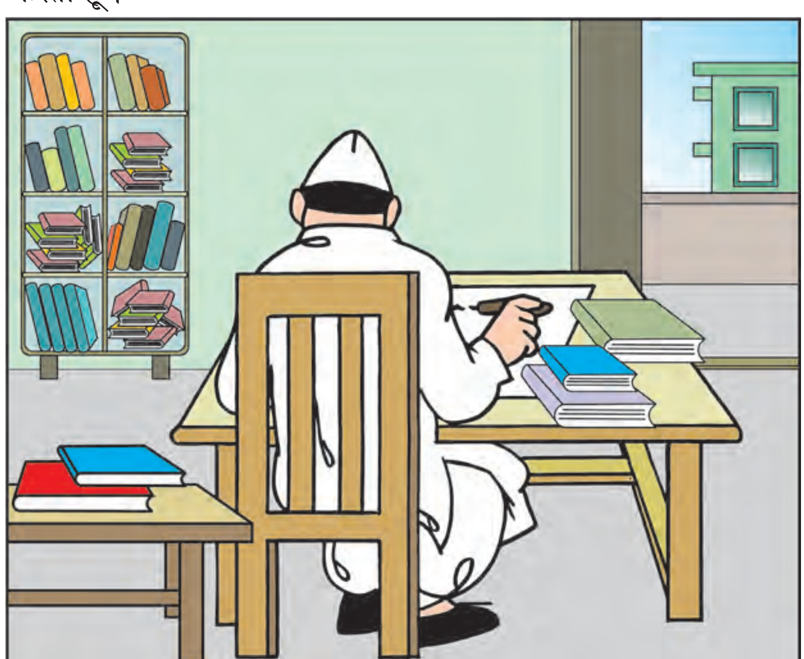

❑ विद्यार्थियों से पत्र का मुखर वाचन कराएँ। प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनौपचारिक पत्र लेखन का प्रारूप समझाएँ। पत्र के आशय पर चर्चा करें। देशसेवा संबंधी अपने विचार बताने के लिए कहें। उन्हें अपने किसी मित्र को बधाई पत्र लिखने के लिए कहें।

हाँ, मैं यह भी जानता हूँ कि यदि मैं पैसे कमाऊँ तो कुछ रुपया हासिल कर पाऊँगा । इसके द्‌वारा मैं अपने परिवार का स्तर ऊँचा करने में भी समर्थ होऊँगा, जहाँ लोग अपनी लंबी थैली के कारण ही बड़े गिने जाते हैं, अपने विशाल हृदय के कारण नहीं । लोग समझते हैं कि धन पाकर हम संतुष्ट होंगे पर जिन्हें कुछ भी ज्ञान है वे अच्छी तरह जानते हैं कि सुख बाह्‌य कारणों से नहीं मिलता बल्कि वह तो हृदय की उपज है ।

मेरे भैया, आप विश्वास रखें कि यदि मेरे जीवन में कोई महत्त्वाकांक्षा है तो वह यही है कि मैं देशसेवा में काम आ सकूँ । मैं जानता हूँ कि मैं प्रति मास कई सौ रुपये कमाऊँगा, कई हजार रुपये महीने भी हो सकते हैं । पर क्या दुनिया में ऐसे अनगिनत व्यक्ति नहीं हैं जिनके पास हजारों, लाखों और करोड़ों की पूँजी है, पर उनकी कोई परवाह नहीं करता लेकिन दूसरी ओर दृष्टि डालें, तो कौन-सा राजकुमार है जिसे गोपाळ कृष्ण गोखले के समान प्रभाव, पद या मर्यादा प्राप्त हुई है ? और क्या वे गरीब आदमी नहीं हैं ? क्या हम गोखले जी के परिवार से भी ज्यादा गरीब हैं ? अगर लाखों व्यक्ति दो या तीन रुपये महीने से काम चला लेते हैं तो हम लोग भला सौ रुपये से क्यों नहीं चला सकते ?

मेरे भाई, इसपर विचार करें और अपनी राय बताएँ । आप दुनिया के समक्ष यह साबित कर दें कि आज भी दुनिया में ऐसे मनुष्य हैं जिनके लिए रुपये-पैसे तुच्छ वस्तु हैं और जिनके लिए देशसेवा ही सब कुछ है ।

मैं अपनी पत्नी को भी इसके संबंध में लिख रहा हूँ । मैं माता जी को नहीं लिख सकता । वृद्‌धावस्था में उन्हें इससे भारी कष्ट पहुँच सकता है ।

आपका प्यारा,
राजेंद्र

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
केंद्रीभूत = केंद्र में इकट्‌ठा
धक्का लगना = चोट लगना
महत्तर = महत्वपूर्ण
हासिल = प्राप्त

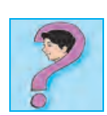 **अध्ययन कौशल**

अपने विद्‌यालय संबंधी जानकारी देने वाला स्थल दर्शक फलक गुट में बनाओ ।

स्वयं अध्ययन

'क्रांति दिन' समारोह की आकर्षक कार्यक्रम पत्रिका बनाओ ।

खोजबीन

भारत की महान विभूतियों के नाम एवं कार्यसंबंधी लिखित जानकारी प्राप्त करो ।

सुनो तो जरा

परिपाठ में सुनी हुई नीति कथा अपने घर में सुनाओ ।

बताओ तो सही

पत्र के बदलते स्वरूप कौन-से हैं ? अंतरजाल की सहायता से ढूँढ़ो और बताओ ।

वाचन जगत से

हितोपदेश की कोई कहानी पढ़ो और कहानी की सीख लिखो ।

मेरी कलम से

शालेय सूचना फलक पर लिखने के लिए दिनविशेष की जानकारी अपनी कॉपी में लिखो ।

* रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

१. मैं अपने भाग्य को ...... के साथ मिला दूँ ।

२. लोग समझते हैं कि ...... पाकर हम संतुष्ट होंगे ।

३. क्या हम ...... जी के परिवार से भी ज्यादा गरीब हैं?

४. ...... में उन्हें इससे भारी कष्ट पहुँच सकता है ।

विचार मंथन

।। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, योगासन है उत्तम साधन ।।

सदैव ध्यान में रखो

भाषा 'भाव और विचारों' के आदान-प्रदान का प्रभावी साधन है ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए चित्रों में लिखे हुए वाक्य पढ़ो, उनमें अव्ययों के प्रकार एवं शब्द पहचानकर उचित स्थान पर लिखो ।